हिंदी फिल्मी गीतों में प्रकृति चित्रण

डॉ, महमद नयास पाशा
सहायक प्राध्यापक, क्रिस्तुजयंति महाविद्यालय
के नारायणापुरा, बेंगलूरू, 560077
दूरवाणी 9632783783
मेल nayazpasha@kristujayanti.com

हिन्दी सिनेमा भारतीय सभ्यता का अंग माना गया है। भारतीय हिंदी सिनेमा में व्यवसाईक,और कला सिनेमा के रूप में देखसकते है। हिन्दी सिनेमा को जिसे आज बॉलीवुड के रूप में जाना जाता है।

आज के दौर में भारतीय हिंदी सिनेमा में ऐसे किस्म के लोग भी हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते हैं और करते थे। 1930 से हिंदी सिनेमा का इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया गया। आज पर्यावरण प्रदूषण के संदर्भ में हिंदी फ़िल्मों के सहारे प्रकृति सौंदर्य के महत्व को गीतों के सहारे सब के मन को छूने का प्रयास किया गया है।

हिंदी के सैकडों फिल्में प्राकृतिक सौंदर्य के वर्णन से हिट हो गई है। नायक-नायिकाओं की अभिनय प्रतिभा प्रकृति के आलंबन से उसकी छाया में उभरा है। और हीरो हिरोइन के प्रेम के जरिए प्रकृति की ख़ूबसूरती इन गीतों में झलकती है। पहाडी पर्वतों के साये में कलरव की ध्वनी करते झरने या नदियां हों या फूलों से भरे बाग़ बगीचे हो, हिंदी गीतों में प्रकृति के सभी किस्म के सुहाने दृश्य को पेश किए गए हैं। इन चित्र गीतों को सुनकर और देखकर मन सौंदर्य उस छटा पर आकृष्ट है। इस खंड में हम हिंदी फ़िल्मों के जरिए प्रकृति और उसके सौंदर्य का बोध आपको कराएंगे।

इस श्रेणी में सबसे अनुपम गीत 1967 में रिलीज़ फ़िल्म मिलन में सावन के महिने को लेकर जो गीत लिखा गया वह आज भी सब गुन गुनाते है। गीत के बोल हैं ' सावन का महीना पवन करे शोर। सुनिल दत्त पर यह गीत फ़िल्माया गया है। आनंद बक्षी गीतकार है। मुकेश ने इसमें अपनी मधुर आवाज़ दी है। लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने इसे संगीत से सजाया है। गीत में प्रकृति के सावन के महीने की विशेषता को वर्णन किया गया है। पवन की जोर-शोर, और नदिया की धारा का विस्तृत स्वरूप का चित्रण है।

एक विरही के लिए प्रकृति कैसे दिख रही है 1959 में एल वी प्रसाद द्वारा निर्मित छोटी बहन फिल्म में हसरत जैपुरी ने लिखा हुआ साहित्य जाऊँ कहाँ बता ऐ दिल

दुनिया बड़ी है संगदिल चाँदनी आई घर जलाने सुझे न कोई मंज़िल जाऊँ कहाँ बता ...

बनके टूटे यहाँ आरज़ू के महल ये ज़मीं आसमाँ भी गये हैं बदल कहती है ज़िंदगी इस जहाँ से निकल

जाऊँ कहाँ बता ...हाय इस पार तो आँसुओं की डगर जाने उस पार क्या वो किसे है खबर ठोकरें खा रही हर कदम पर नज़र जाऊँ कहाँ बता ...

संयोग श्रृंगार में प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए उसकी हँसी को बिजली के समान बताया है। फिल्म बंधन में गीत के बोल है ना तो आज बरसात का मौसम ना कहीं छाई बदरिया फिर भी मोरे जियरा में चमके अरे थम-थम कोई बिजुरिया बिना बदरा के बिजुरिया कैसे चमके कैसे चमके कोई पूछे रे हमसे मुस्काये घुँघटा में मुखड़ा छिपाये।

अनिता फिल्म में राजा मेहंदी के साहित्य में नायक अपने प्रेम को सागर की गहराइ के साथ जोडा गया है प्रेम का सागर हाय, चारों तरफ़ लहराए जितना आगे जाऊँ, गहरा होता जए ग़म के भंवर में, क्या क्या डूबा,पूछो मेरे दिल से, पूछो मेरे दिल से तुम बिन जीवन ...

जैसे जुगनू बन में, तू चमके अंसुवन में बन कर फूल खिली हो, जाने किस बगियन में मै अपनी किस्मत पे रोया, पूछो मेरे दिल से, पूछो मेरे दिल से तुम बिन जीवन

शैलेंद्र द्वारा लिखित सम्राट तानसेन में हमारी यादें कैसे नजरबंद हो गई इस बात पर कवि कहता है

झूमती चली हवा, याद आ गया कोई बुझती बुझती आग को, फिर जला गया कोई झूमती चली हवा ...

चुप हैं चाँद चाँदनी, चुप ये आसमान है मीठी मीठी नींद में, सो रहा जहान है सो रहा जहान है

आज आधी रात को, क्यों जगा गया कोई झूमती चली हवा ...

एसे ही आशिक फिल्म में शैलेंद्र लिखते है

ओ शमा, मुझे फूँक दे मैं न मैं रहूं, तू न तू रहे यही इश्क़ का है दस्तूर, यही इश्क़ का है दस्तूर परवाने जा, है अजब चलन यहाँ जीतेजी अपना मिलन क़िस्मत को नहीं मंज़ूर, क़िस्मत को नहीं मंज़ूर शाम से लेकर रोज़ सहर तक, तेरे लिए मैं हर रात जली मैं तो हाय ये भी न जाना, कब दिन डूबा कब रात ढली फिर भी हैं मिलने से मजबूर, फिर भी हैं मिलने से मजबूर ओ शमा, मुझे फूँक दे …

पत्थर-दिल हैं ये जगवाले, जाने ना कोई मेरे दिल की जलन जब से है जन्मी प्यार की दुनिया, तुझको है मेरी मुझे तेरी लगन तुझ बिन ये दुनिया बेनूर, तुझ बिन ये दुनिया बेनूर परवाने जा, है अजब चलन …

हाय री क़िस्मत, अँधी क़िस्मत, देख सकी ना मेरी-तेरी ख़ुशी हाय री उल्फ़त, बेबस उल्फ़त, रोके थकी जल-जलके मरी दिल जो मिले किसका था क़ुसूर, दिल जो मिले किसका था क़ुसूर ओ शमा, मुझे फूँक दे …

आनंद बख्शी द्वारा लिखित फिल्म कहीं और चल 1968 में बनी थी। इस फिल्म में पानी के खेल को इस रूप में देखते है।

पानी पे बरसे जब पानी, जब हों फ़िज़ाएँ दीवानी फिर तो ऐसे मौसम में, करता है दिल भी नादानी कुछ ढूँढ़ती हैं दो आँखें, कुछ खोजता है मन मेरा वो कौन है कहाँ पर है, जिसके ख़याल ने घेरा पानी पे बरसे जब पानी …

बिजली चमक-चमककर क्यूँ हमें मुँह-चिढ़ाए जाती है नटखट इशारे कर-करके क्यूँ मुस्कुराए जाती है

पानी पे बरसे जब पानी …

आनंद बख्शी द्वारा लिखित फिल्म शोर में पानी के महत्व को समझाते है कि

पानी रे पानी तेरा रंग कैसा जिसमें मिला दो लगे उस जैसा पानी रे पानी तेरा रंग कैसा...

इस दुनिया में जीनेवाले ऐसे भी हैं जीते रूखी-सुखी खाते हैं और ठंडा पानी पीते तेरे एक ही घूँट में मिलता जन्नत का आराम पानी रे पानी तेरा रंग कैसा भूखे की भूख और प्यास जैसा...गंगा से जब मिले तो बनता गंगाजल तू पावन बादल से तू मिले तो रिमझिम बरसे सावन आया सावन आया रिमझिम बरसे पानी आग ओढ़कर आग पहनकर, पिघली जाए जवानी कहीं पे देखो छत टपकती, जीना हुआ हराम पानी रे पानी तेरा रंग कैसा दुनिया बनाने वाले रब जैसा...वैसे तो हर रंग में तेरा जलवा रंग जमाए जब तू फिरे उम्मीदों पर तेरा रंग समझ ना आए कली खिले तो झट आ जाए पतझड़ का पैगाम पानी रे पानी तेरा रंग कैसा सौ साल जीने की उम्मीदों जैसा...

फिल्म अनोखी रात में इन्दीवर के लिखित बोल में प्रकृति का चक्र कैसे फिरता रहता है इस बात का वर्णन इन शब्दों से किया गया है।

ओह रे ताल मिले नदी के जल में नदी मिले सागर में सागर मिले कौन से जल में कोई जाने ना

ओह रे ताल मिले नदी के जल में ...सूरज को धरती तरसे धरती को चंद्रमा पानी में सीप जैसे प्यासी हर आतमा ओ मितवा रे ए ए ए ए पानी में ... बूंद छुपी किस बादल में कोई जाने ना ओह रे ताल मिले नदी के जल में ... अन्जाने होंठों पर ये पहचाने गीत हैं कल तक जो बेगाने थे जनमों के मीत हैं ओ मितवा रे कल तक ... क्या होगा कौन से पल में कोई जाने ना ओह रे ताल मिले नदी के जल में ...

भरत व्यास द्वारा लिखित फूल जो बनगई मोति फिल्म में प्रकृति को बिछाना और छत के समान देखा गया है।

हरी हरी वसुंधरा पे नीला नीला ये गगन के जिसपे बादलों की पालकी उड़ा रहा पवन दिशायें देखो रंगभरी, चमक रही उमंगभरी ये किसने फूल फूल पे किया सिंगार है ये कौन चित्रकार है, ये कौन चित्रकार है...

तपस्वीयों सी हैं अटल ये पर्वतों की चोटियाँ ये सर्प सी घूमेरदार, घेरदार घाटियाँ ध्वजा से ये खड़े हुये हैं वृक्ष देवदार के गलीचे ये गुलाब के, बगीचे ये बहार के ये किस कवि की कल्पना का चमत्कार है ये कौन चित्रकार हैं...

कुदरत की इस पवित्रता को तुम निहार लो इसके गुणों को अपने मन में तुम उतार लो चमका लो आज लालिमा, अपने ललाट की कण-कण से झाँकती तुम्हें, छबि विराट की अपनी तो आँख एक है, उसकी हज़ार है

ये कौन चित्रकार है...

साहित्यकार जलालबडी द्वारा रचित प्यासे पंछि फिल्म में पंछियों के खुशियों को जाहिर करते हुए बताते है कि मनुष्य स्वार्थि होने के कारण एक दूसरे के साथ घुलमिलने में सोच विचार करता है लेकिन पंछि समाज सब एक साथ मिलकर जीते है साहित्यकार का प्रश्न है कि क्यों मनुष्य इनसे पाठ नहीं सीखता वैसे ही अलग अलग नदियों का पानी एक साथ मिलकर समुद्र से नाता जोडलेता है । प्रकृति के फूल किसीसे प्रश्न किए बगैर राही को खुश्बू देते है लेकिन मनुष्य इसके विपरीत है।

प्यासे पछि नील गगन में,गीत मिलन के गाएँ,गीत मिलन के गाएँ, इस मेले में हम है अकेले, साथी किसे बनाएं, साथी किसे बनाएं, प्यासे पछि नील गगन में, गीत मिलन के गाएँ, गीत मिलन के गाएँ, ओ मतवाले राही तुझको मज़िल कहाँ बुलाए किसको खबर है इन राहों में कौन कहाँ मिल जाए ओ मतवाले राही तुझको मज़िल कहाँ बुलाए किसको खबर है इन राहों में कौन कहाँ मिल जाए जैसे सागर की दो लहरें चुपके से मिल जाएं गीत मिलन के गाएँ प्यासे पछि नील गगन में गीत मिलन के गाएँ गीत मिलन के गाएँ छुपी है आहे किस प्रेमी की बादल की आहो में बिखरी हुई है खुशबु कैसी अलबेली राहो में छुपी है आहे किस प्रेमी की बादल की आहो में बिखरी हुई है खुशबु कैसी अलबेली राहो में किसकी ज़ुल्फ़े छू कर आई महकी हुई ये हवाएं गीत मिलन के गाएँ प्यासे पछि नील गगन में गीत मिलन के गाएँ गीत मिलन के गाएँ इस मेले में हम है अकेले साथी किसे बनाएं साथी किसे बनाएं के मनोहर द्वारा रचित 1960 के हम हिंदुस्तानी फिल्म में नायक अपनी प्रेमिका को प्रकृति से जोडता है और उसकी प्रशंसा इस प्रकार करता है।

रात निखरी हुई ज़ुल्फ़ बिखरी हुई, हर अदा तेरी फूलो की डाली , आज सुबह नहीं होने वाली, आज सुबह नहीं होने वाली, रात निखरी हुई ज़ुल्फ़ बिखरी हुई, हर अदा तेरी फूलो की डाली, आज सुबह नहीं होने वाली , आज सुबह नहीं होने वाली, यह समा थम गया , ये हसी अदाए देख के, यह समा थम गया ये हसी अदाए देख के, धडकने सो गई ये , नशीली आँखे देख के देख के, रात निखरी हुई ज़ुल्फ़ बिखरी हुई, हर अदा तेरी फूलो की डाली, आज सुबह नहीं होने वाली, आज सुबह नहीं होने वाली, रात निखरी हुई, रंग भरी मस्तियाँ, ये बहारो के काफिले , रंग भरी मस्तियाँ, ये बहारो के काफिले, हम चले तुम चले कोई साथ साथ चल दिए , चल दिए, रात निखरी हुई ज़ुल्फ़ बिखरी हुई, हर अदा तेरी फूलो की डाली आज सुबह नहीं होने वाली, आज सुबह नहीं होने वाली, रात निखरी हुई।

फिल्म पुजारिन में मदन भारती द्वारा रचित मेरा प्रेम हिमालय से ऊंचा गीत में नायक अपनी नायिका को प्रकृति के साथ उपमान देते हुए बखान करता है कि मेरा प्रेम हिमालय से ऊंचा, सागर से गहरा प्यार मेरा, मेरा प्रेम हिमालय से ऊंचा, अपना कह दे इक बार मुझे, होगा मुझपे उपकार तेरा, जब मस्त पवन के गीतों पे, बजती है बहारों की पायल, जब मस्त पवन के गीतों पे, बजती है बहारों की पायल, चंचल नदिया की, बांहों में जब घिर, आए प्यासा बादल, तब याद मुझे तेरी आती, कुछ है तुझपे अधिकार मेरा,

मेरा प्रेम हिमालय से ऊंचा, सागर से गहरा प्यार मेरा, नैनों में हैं अमृत के, प्याले तन निल, गगन सा निर्मल है , नैनों में हैं अमृत के, प्याले तन निल, गगन सा निर्मल है, वाणी में है वीणा की, सरगम मन फूल से, भी तेरा कोमल है, तुझे देख के ऐसा, लगता है कितना सुन्दर, संसार मेरा, मेरा प्रेम हिमालय से ऊंचा, सागर से गहरा प्यार मेरा, अपना कह दे इक बार मुझे, होगा मुझपे उपकार तेरा, मेरा प्रेम हिमालय से ऊंचा, सागर से गहरा प्यार मेरा।

साहिर लुधियानवीं द्वारा रचित ये वादियाँ ये फिजाएं साहित्य फिल्म आज और कल में प्रकृति ही कैसे एक नायिका को स्वागत कर रहीं है इसी बात का संकेत नायक देते हुए कहता है कि ये वादियाँ, ये फिजाएँ बुला रही हैं तुम्हें ये वादियाँ, ये फिजाएँ बुला रही हैं तुम्हें खामोशियों की सदाएँ बुला रही हैं तुम्हें ये वादियाँ, ये फिजाएँ बुला रही हैं तुम्हें..तरस रहे है जवाँ फूल होंठ छूने को मचल मचल के हवाएं बुला रही है तुम्हे खामोशियों की सदाएँ बुला रही हैं तुम्हें ये वादियाँ, ये फिजाएँ बुला रही हैं तुम्हें..तुम्हारी जुल्फों से खुश्बू की भीख लेने को झुकी झुकी सी घटाएँ बुला रही हैं तुम्हें खामोशियों की सदाएँ बुला रही हैं तुम्हें ये वादियाँ, ये फिजाएँ बुला रही हैं तुम्हें..हसीन चम्पई पैरों को जब से देखा है नदी की मस्त अदाएँ बुला रही हैं तुम्हें खामोशियों की सदाएँ बुला रही हैं तुम्हें ये वादियाँ, ये फिजाएँ बुला रही हैं तुम्हें।

प्रकृति के सारे खेल को बिगाडने का काम इन्सान से ही होति है प्रकृति निस्वार्थ भावना से सब को सेवा प्रदान करती रहती है इस बात का उल्लेख आनंद बख्शी द्वारा लिखित आया सावन झूम के फिल्म में देख सकते है। ये शमा तो जली रौशनी के लिए इस शामा से कहीं आग लग जाए तो ये शमा क्या करे ये शमा तो जली रौशनी के लिए इस शामा से कहीं आग लग जाए तो ये शमा क्या करे ये हवा तो चली सांस ले हर कोई घर किसी का उजड़ जाए आंधी में तो ये हवा क्या करे चल के पूरब से ठंडी हवा आ गयी चल के पूरब से ठंडी हवा आ गयी उठ के पर्वत से काली घटा छा गयी ये घटा तो उठि प्यास सबकी बुझि आशियाँ पे किसी के गिरीं बिजलियां तो ये घाटा क्या करे ये शमा तो जली रौशनी के लिए हो हो हो पूछता हूँ मैं सबसे कोई दे जवाब पूछता हूँ मैं सबसे कोई दे जवाब नाखुदा की भला क्या खता है जनाब नाखुदा ले के साहिल के जानिब चला डूब जाए सफीना जो मंझधार में तो नाखुदा क्या करे ये शमा तो जली रौशनी के लिए वो जो उलझन सी तेरे ख्यालों में है वो जो उलझन सी तेरे ख्यालों में है वो इशारा भी मेरे सवालों में है ये निगाह तो मिली देखने के लिए पर कहीं ये नज़र धोखा खा जाए तो ये निगाह क्या करे ये शमा तो जली रौशनी के लिए इस शामा से कहीं आग लग जाए तो ये शमा क्या करे हम्म हम्म।

मानव जीवन प्रकृति से ही जुडा हुआ है भारतीय सिनेमा के हर कोई फिल्म उससे हटकर चित्र नहीं बना सकते भारतीय सिनेमा की लंबी यात्रा में अन्य देशों के सिनेमा की ही तरह यहां के सामाजिक परिवेश और प्रकृति के असर देखने को मिला है और समय के साथ भारतीय सिनेमा भी अपनी कथावस्तु में इस पर्यावरण को लेकर ही आगे बढ़ा है। समय-समय पर बदलते सामाजिक परिवेश के अनुरूप नए तेवर लिए फिल्मों के नायक सामने आए तथा उसने अपनी तरह से समाज को प्रभावित किया है। लेकिन प्रकृति के बिना सिनेमा अधूरा ही रह जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ

1 रफी के सूपरहिट गीत श्री दुर्गा पुस्तक भंडार इलाहाबाद 1970 भोला नाथ खन्नी कदीम

2 कुमारसानू के सूपरहिट गीत राजश्री प्रकाशन दिल्ली महंत 2009 ओमनाथ शर्मा

3 किशोर कुमार के लोकप्रिय गीत सेन्ट्रल प्रकाशन मुंबई 2007 बुरहाणपुरवाला